एम्स में आँखों का इलाज कराने वालों की आँखों देखी

डॉक्टर लगा रहे हैं हांका, मरीज लाइन में बिलबिला रहे हैं

विवेक कुमार

"अंदर डॉक्टर बुला रहा है","अरे डाक्टर को बोल कि बाहर गार्ड बुला रहा है"। देश के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित अस्पताल एम्स में निजी कंपनी के एक गार्ड का गुस्से से डॉक्टर को आदेश देकर बाहर बुलाना अटपटा सा लगा। इसी प्रकार एक अन्य गार्ड और नर्सिंग स्टाफ आपस में भिड़ गए जिसकी आंच लाइनों में लगे मरीजो पर भी पड़ी। थोड़ी देर में डॉक्टर बाहर आया और गार्ड से गरमा-गर्मी ने पसीने में डूबे मरीजों के कलेजों में ठंडक पहुंचाई, दो लोगों का झगड़ा भारतीय समाज में जो मजा देखने वालों को देता है वह मजा करोड़ों की फिल्में भी नहीं दे सकी हैं। बिग बॉस जैसे सड़क छाप टीवी प्रोग्राम इसी शोध का नतीजा हैं जिसका विजेता मर जाए तो मीडिया छाती फाड़ने लगता है और रोज लाइनों में मरते इस देश की सुध किसी चैनल अखबार में नहीं दिखती।

गार्ड और डॉक्टर की तू-तू, मैं-मैं को भीड़ ने अपने-अपने तरीके से परिभाषित करना शुरू किया। एक बुजुर्ग जिनकी बहू उनकी ओर से लाइन में खड़ी थी ने आकर अपनी बहु से पूछा कि "क्यों रि,यो करेगा मेरी आँख का इलाज, या का तै अपना दिमाग खराब हो रा"। बहू झुँझलाते हुए बोली 'बैठ जाओ आप जहां बैठाया है वरना सीट पर भी कोई और बैठ जाएगा'। बूढ़े आदमी ने कुर्सी की तरफ दौड़ लगा दी। किसी ने कहा कि आजकल का खानपान बहुत बिगड़ गया है इसलिए अब डॉक्टर और गार्ड दोनों खीझे रहते हैं। कोई कहे डॉक्टर गलत तो कोई गार्ड की गलती दे खैर, बढ़िया वक्त बिताने का मुद्दा मिला। गार्ड ने पंक्ति में खड़े मरीजों और तीमारदारों को समझाया कि कैसे उनके हक की लड़ाई के लिए उसने अपनी नौकरी की परवाह नहीं की। अंत में 'गार्ड (चौकीदार) न हो तो अस्पताल को कौन चलाएगा' इस दावे ने विजय प्राप्त की।

35 वर्ष के मेरे जीवन में 20 वर्ष एम्स में रहते हुए बीते। पिता एम्स में कार्यरत थे और उत्तर प्रदेश का होने के नाते उड़ती चिड़िया पकड़ने का शौक उन्ही से मुझमे भी आया। उड़ती चिड़िया का मतलब है दूर पड़ी मुसीबतों को खुद न्योता देना। इतने लंबे अरसे तक एम्स आवासीय परिसर में रहने के दौरान गाँव से लगभग हर दिन किसी न किसी का आना जाना लगा ही रहता था जिसका मूल कारण एम्स में इलाज करवाना होता था। ओपीडी कार्ड बनवाना एक बड़ा युद्ध जीतने से कम नहीं था। इन सबके बावजूद एम्स में अपने पिता से लेकर और अन्य किसी स्टाफ को कभी किसी पर वाहियात तरीके से चिल्लाते नहीं देखा और न ही व्यवस्था को ऐसे चरमराते। मेरे पिता भी इस बात से इत्तेफाक रखते हैं।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद नेत्र अस्पताल एम्स में 9 सितंबर की सुबह 6 बजे से ही जनता लाइन लगाए खड़ी थी। ऐसा नहीं है कि लाइन लगा कर खड़े होना अस्पताल या इस देश के लिए कोई नई बात है। बल्कि दो महीने तक लाइन लगाने के लिए ही देश के प्रधानमंत्री ने पूरे देश को छुट्टी दी थी और देश खुशी-खुशी लाइन में लगा भी था। नया है तो एम्स जैसे अस्पताल का इस कदर बर्बाद होना। 200 से अधिक लोगों के आँख की छोटी-बड़ी सर्जरी नेत्र विभाग की पाँचवीं मंजिल पर रोज होती है। और अब यह नजारे आम हैं।

मामला शुरू होता है यहाँ से विभाग के मुखिया और जाने माने सर्जन डॉ. टिटियाल के मरीजों को लाइन से इतर दिए गए वक्त पर हाँका लगवा कर बुलाया जाता है ताकि सीनियर सर्जन नाराज न होने पाए। ऐसे में अन्य मरीजों के कान खड़े होते हैं कि हम तो सुबह से खड़े हैं हमें क्यों नहीं बुलाया और बात गार्ड की ईमानदारी के पत्ते नोचने तक आ जाती है। गार्ड डायरेक्ट लाइन ऑफ फायर में है वह भी उत्तर प्रदेश या बिहार से दिल्ली में नौकरी करने आया है, तो जैसा कि बताया गया कि इस इलाके के आदमी को उड़ती चिड़िया पकड़ने का शौक होता है सो उसे भी है, इसलिए जान पहचान वालों को वह भी दायें बाएं से घुसा देता है।

बढ़ती भीड़ का दबाव झेलना डॉक्टरों व मरीजों को पड़ रहा है भारी

अंगूरी लाल के लिए ऑपरेशन से पहले शोचालय बना, चेंजिंग रूम

मेरे पिता की आँख की सर्जरी भी डॉ. टीटीयाल साहब ने ही करनी थी और क्योंकि मेरे पिता एम्स स्टाफ के व्यक्ति हैं इसलिए उनका नंबर जल्दी आ गया। अपने जीवन के लगभग आखरी बसंत में आ चुका एक गार्ड अचानक मुझपर चिल्लाते हुए किनारे होने का आदेश देने लगा। मैंने बताया कि हमारा नंबर आ गया है और साइन करना ही बाकी है जिस पर गार्ड इमाम हुसैन ने मुझे छठी मंजिल पर जा कर साइन करने का हुक्म सुनाया। फर्श पर बैठी महिला को डांट पिलाते हुए बैठने का फरमान जारी होने के साथ ही लाइन में खड़े सभी लोगों के कागजात देखे और तस्दीक की कि कहीं खालिस्तानी, तालिबानी, या अर्बन नक्सल तो अपना इलाज कराने न चला आया है। इस औचक निरीक्षण ने कई लोगों को पाँचवीं मंजिल से निकाल कर छठी मंजिल पर इंतजार करने के लिए भेज दिया।

बिना पंखे और कुर्सी के 4 घंटे से खड़े लगभग सभी बुड्ढों ने अपने कूल्हे दीवार से टिकाए ही थे कि भीतर से एक डॉक्टर बाहर आया जिसे देखते ही सबको अपने मरीज के अंदर बुलाए जाने की आस जगी। डॉ ने मिमियाती आवाज में 'रामफूल' के नाम का हाँका दिया। दो हांकों में ही डॉक्टर साहब की सांस उखाड़ गई तो मरीजों ने उनका साथ दिया और रामफूल के नारों से पूरा माला गूंज गया। रामफूल का ठीक भगवान राम की ही तरह कहीं कोई अता पता नहीं चला, चलता भी कैसे, रामफूल के पिछवाड़े पर लात मार के गार्ड ने उसे छठवें माले पर भेज दिया था। रामफूल नहीं मिला तो अंगूरीलाल को सफेद कपड़े देते हुए गार्ड ने उसे पेशाबघर में ही कपड़े बदलने के लिए भेज दिया, कारण बताया कि चेन्जिंग रूम व्यस्त है, सबने गार्ड की समझदारी की तारीफ की।

मुझे भी बतौर अटेंडेंट छठे माले पर इंतजार करने का हुक्म हुआ जिसकी तामील की गई। छठे माले पर जा कर देखा तो पाया कि बैठने के लिए मात्र चंद कुर्सियाँ और लोगों की संख्या सैकड़ों में। वहाँ भी व्यवस्था का जिम्मा एक फुट लंबी मूंछ वाले चौकीदार ने संभाली हुई थी। अचानक नीचे से एक अन्य स्टाफ आया और सबके हाथ में पर्ची देते हुए कहा कि जाओ ये दवा ले कर आओ। कहाँ से लाएं एक बुजुर्ग महिला ने पूछा, बाहर सड़क पर दवा की दुकान है, महिला ने फिर कहा वो तो बहुत दूर है और लिफ्ट भी भरी हुई आ रही है, तो मैं क्या करूँ, जल्दी लाओ, कर्मी ने आदेश दिया।

70 वर्षीय रामप्रकाश को डॉक्टर ने कहा कि जब तक रिपोर्ट नहीं मिलेगी इलाज नहीं होगा और रिपोर्ट आने में वक्त लगेगा। रामप्रकाश ने कहा 'रे डाक्टर तेरे को कुछ न पता भाई, रिपोर्ट तीन दिन में आती है और अब 10 दिन हो लिए'। डॉक्टर के आत्मसम्मान का एक अनपढ़ मरीज द्वारा रौंदे जाने पर वो फट पड़ा कि मैंने इतने साल पढ़ाई की है, तु बताएगा मुझे कि क्या करना है क्या नहीं। इलाज की उम्मीद छोड़ चुके रामप्रकाश ने भी जवाबी फायरिंग में कह डाला, 'दीख तै ना रा भाई कि तन्ने कुछ पता भी है'। एकमत से बाद में सहमति बनी कि ये वाला डॉक्टर निकम्मा है इसलिए इसे हाँके की ड्यूटी दी गई है वरना डॉक्टर तो कमरे में बैठ के मरीज देखता है बस।

कुछ मरीजों को दिए गए समय से देर से आने के कारण दोपहर बाद का वक्त दे दिया गया। जबकि मेरे जैसे जो लोग सुबह 7 बजे अपने दिए वक्त पर आए उन्हे दोपहर के 3 बज गये और तब जा कर कहीं मेरे पिता की सर्जरी होने के बाद हमें छुट्टी मिली, जबकि सर्जरी का समय सुबह 8 बजे का था। अचानक हमारी पड़ोसन मिल गईं जो इसी विभाग के लैब में वरिष्ठ पद पर कार्यरत हैं। अपने दफ्तर में चाय पिलाते हुए उन्होंने बताया कि न तो डॉक्टर पूरे हैं, न ही सपोर्टिंग स्टाफ की भर्ती की गई है। जो मरीज खड़े हैं इसमे से कुछ का नंबर रात 8 बजे तक आएगा। गार्ड अपना मूल काम छोड़ कर बाकी सब काम करता है। बैक ऑफिस का अधिकतर काम निजी कंपनियों को ठेके पर दे दिया गया है इसलिए सरकारी आदमियों से उनका सामंजस्य नहीं बन पा रहा। डॉक्टर को इलाज छोड़ कर हाँका भी अब खुद ही लगाना पड़ रहा है जबकि जिला अस्पतालों में गाय-कुत्ते बैठ रहे हैं और वहाँ की सारी भीड़ एम्स आती है।

कुल जमा जिस एम्स में काम करना मेरे पिता के लिए शान की बात थी महज तीन चंद वर्षों में उसकी ऐसी दशा देख कर उनका मोदी सरकार से मोहभंग होने का बिस्मिल्लाह हुआ। घर जाते वक्त उनके समय के कुछ सहकर्मी सीढ़ियों पर मिले जिन्होंने एम्स से बचने की सलाह देते हुए कहा कि अब एम्स में वो बात नहीं रही रायसाहब। गार्ड ने सबको डांटते हुए सीढ़ी से हटने का फरमान दिया और मरीजों से मुखातिब होते हुए कहा कि खड़े होकर बातें कर रहे हैं ये नहीं कि काम करें, मोदी अकेले किस-किस को ठीक करें और मैं भी अकेले कहां -कहाँ देखूँ। अपने पिता की आँखों पर काला चश्मा लगवा कर हम भी घर को चले गए। वहाँ खड़े मरीज आँख पर पट्टियाँ बांधे काला चश्मा लगने का इंतजार अंधेरा होने तक करते रहे शायद।

---

14 सितम्बर - हिन्दी दिवस

अंग्रेजी से हिन्दी क्यों है कमजोर ?

अंग्रेजी में मूल शब्द दस हजार हैं और आज साढ़े सात लाख पहुंच गए हैं, यानी कि सात लाख चालीस हजार शब्द बाहर से आए। इसका पता हम लोगों को नहीं है। जैसे अलमिरा को हम लोग मान लेते हैं कि ये अंग्रेजी भाषा का शब्द है, लेकिन वह पुर्तगाली भाषा का शब्द है. इसी तरह रिक्शा को हम मान लेते हैं कि अंग्रेजी का है, लेकिन वह जापानी भाषा का है। चॉकलेट को हम मान लेते हैं कि ये अंग्रेजी भाषा का शब्द है, लेकिन वह मैक्सिकन भाषा का है. बीफ को मान लेते हैं कि अंग्रेजी का है, लेकिन वह फ्रेंच भाषा का है. अंग्रेजी ने बहुत सी भाषाओं के शब्दों को लेकर अंग्रेजी से अपने को समृद्ध किया और संसार की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक है।

अब हिंदी को लीजिए। हिंदी की जो पहली डिक्शनरी है उसकी शब्द संख्या थी बीस हजार। अंग्रेजी का सीधा दो गुना। ये आई थी 1800 ईस्वी के कुछ बाद। पहली डिक्शनरी मानी जाती है पादरी आदम की और दूसरी श्रीधर की।

आज हिंदी डिक्शनरी में शब्दों की संख्या क्या है? डेढ़ लाख से दो लाख अधिकतम। शब्दों की संख्या नहीं बढ़ रही है हिंदी में। इसके कारण हैं. हम लोग उतने उदार नहीं हैं। हमारी भाषा में वही छुआछूत की बीमारी है जो हमारे समाज में है।

लोक बोलियों के शब्दों को हम लेते नहीं हैं. कह देते हैं कि ये गंवारू शब्द हैं. कोई बोल देगा कि तुमको लौकता नहीं है? तो कहेंगे कि कैसा प्रोफेसर है! कहता है तुमको लौकता नहीं है. इसी लौकना शब्द से कितना बढ़िया शब्द चलता है हिंदी में, परिमार्जित हिंदी में, छायावादी कवियों ने प्रयोग किया-अवलोकन, विलोकन. उसमें लौकना ही तो है.

कितनी मर्यादा और उंचाई है इन शब्दों में. उसी को आम आदमी बोल देता है कि तुमको लौकता नहीं है? लौकना और देखना में सूक्ष्म अंतर है. भोजपुरी क्षेत्र में महिलाएं कहती हैं कि हमारे सिर में ढील (जुआं) हेर दीजिए. वे देखना शब्द का प्रयोग नहीं कर रही हैं. काले बाल में काला ढील आसानी से दिखाई नहीं देता, इसलिए वे कहतीं हैं कि ढील हेर दीजिए. कितना तकनीकी शब्द का इस्तेमाल है यह. मतलब गौर से देखिएगा तब वह छोटा-सा ढील दिखाई देखा.

इस तरह आप देखिए कि लोक बोलियों के शब्दों को लेने से हम लोग परहेज कर रहे हैं. विदेशी भाषा के शब्द लेने से आपकी भाषा का धर्म भ्रष्ट हो रहा है. क्रिकेट का हिंदी बताओ, बैंक का हिंदी बताओ, टिकट की हिंदी बताओ. टिकट का हिंदी खोजते-खोजते गाड़ी ही छूट जाएगी. यह छुआछूत का देश है.

इसीलिए हम विदेशी शब्द नहीं लेते कि यह तो विदेशी नस्ल का शब्द है, इसे कैसे लेंगे? यही कारण है कि हिंदी का विकास नहीं हो रहा है. अंग्रेजी बढ़ रही है लेकन हिंदी का विकास वैसा नहीं हो रहा है. हिंदी को छुआछूत की बीमारी है.

हिंदी में शब्दों की संख्या की कमी नहीं हैं. पहले हमारे यहां हिंदी की 18 बोलियां मानी जाती थीं. अब 49 मानी जाती हैं. हिंदी भारत के दस प्रांतों में बोली जाती है. इन दस प्रांतों की 49 बोलियों में बहुत ही समृद्ध शब्द भंडार है. हर चीज को व्यक्त करने के लिए शब्द हैं, लेकिन उसको अपनाने के लिए हम लोगों को परेशानी है.

हम भूसा शब्द का इस्तेमाल करते हैं. हिंदी शब्दकोश में भूसा मिलेगा, लेकिन पांवटा नहीं मिलेगा. जबकि भूसा और पांवटा में अंतर है. भूसा सिर्फ गेहूं का हो सकता है, लेकिन पांवटा धान का होता है. अवधी में इसे पैरा कहते हैं. दोनों एक ही चीज है. पांवटा पांव से है और पैरा पैर से.

दरअसल, हो क्या रहा है कि किसानों के शब्द हमारी डिक्शनरी में बहुत कम हैं. हमारे यहां राष्ट्र भाषा परिषद से दो खंडों में किसानों की शब्दावली छपी हुई है. उसमें कृषक समाज से जुड़े सभी शब्दों को शामिल किया गया है. लेकिन किसानों के शब्द, मजदूरों के शब्द, आम जनता के शब्द हमारी भाषा और शब्दकोश से आज भी गायब हैं. इसलिए गायब हैं कि हम मान लेते हैं कि ये ग्रामीण, गवांरू शब्द हैं.

हमारा देश धर्मप्रधान देश है. हमारी डिक्शनरी पर भी देवी देवताओं का वर्चस्व है. गाजियाबाद के एक अरविंद कुमार हैं, कोशकार हैं. उनपर खुशवंत सिंह ने एक टिप्पणी लिखी थी. उनकी एक डिक्शनरी है शब्देश्वरी. उसमें केवल शंकर भगवान के नामों की संख्या तीन हजार चार सौ ग्यारह है. विष्णु के एक हजार छह सौ छिहत्तर. काली के नौ सौ नाम हैं. दस देवी देवता दस हजार शब्दों पर कब्जा करके बैठे हुए हैं. लेकिन किसानों, मजदूरों और आम जनता के शब्द गायब हैं. ये आपको जोड़ना पड़ेगा.

-प्रो. राजेन्द्र प्रसाद सिंह

(हिमांशु कुमार की फेसबुक वाल से)